لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ﴿148﴾

१४८. अल्लाह बुराई के साथ उँची आवाज़ से मुहब्बत नहीं करता, लेकिन मज़लूम को इस की इजाज़त है और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है।

اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا عَنْ سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا ﴿149﴾

१४९. अगर तुम कोई नेक काम खुल कर करो या छिपाकर या किसी बुराई को माफ़ करते हो, तो बेशक अल्लाह (तआला) माफ़ करने वाला, क़ुदरत वाला है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّنَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّيُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۙ﴿150﴾

१५०. जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान नहीं रखते हैं और चाहते हैं कि अल्लाह और उस के रसूलों के बीच अलगाव करें और कहते हैं कि हम कुछ को मानते हैं और कुछ को नहीं मानते और इस के बीच रास्ता बनाना चाहते हैं।

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ۚ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿151﴾

१५१. यक़ीन करो, कि यह सभी लोग असली काफ़िर हैं।[1] और काफ़िरों के लिये हम ने बहुत सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा हैं।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰٓئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿152﴾

१५२. और जो अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाये और उन में से किसी के बीच इख़्तिलाफ़ नहीं किये उन्हीं को अल्लाह उनका पूरा बदला देगा और अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

يَسْـَٔلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَآءِ فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰٓى اَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْٓا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ

१५३. आप से अहले किताब यह सवाल करते हैं कि आप उन पर आसमान से कोई किताब उतारें[2] तो उन्होंने मूसा से इस से बड़ी माँग की थी और कहा कि हमें वाज़ेह तौर से अल्लाह

---

[1] अहले किताब के बारे में पहले बयान हो चुका है कि वह कुछ नबियों को मानते और कुछ को नहीं मानते। जैसे यहूदी हज़रत ईसा और हज़रत मोहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ को नहीं मानते, और ईसाई हज़रत मोहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ को क़ुबूल नहीं करते, अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि नबियों के बीच फ़र्क़ करने वाले पक्के काफ़िर हैं

[2] यानी जिस तरह हज़रत मूसा عليه السلام तूर पहाड़ पर गये और तख़्तियों पर लिखी हुई तौरात लेकर आये, उसी तरह आप आसमान पर जाकर लिखा हुआ क़ुरआन मजीद लेकर आईये, यह माँग सिर्फ़ फ़ितना, इंकार करने और हसद की बिना पर था।

بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ ۚ وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا (153)

को दिखाओ, फिर उन्हें बिजली ने घेर लिया उन के ज़ुल्म की वजह से फिर उन्होंने वाज़ेह दलीलों के आ जाने के बाद बछड़े को (पूज्य) बना लिया, और हम ने उन्हें माफ़ कर दिया और मूसा (नबी) को खुली दलील दिया।

وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِي السَّبْتِ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا (154)

१५४. और उन से वादा लेने के लिए तूर (पहाड़) हम उन के ऊपर ले आये और उन्हें हुक्म दिया कि सज्दा करते हुए दरवाज़े में दाख़िल हो और यह भी हुक्म किया कि शनिवार के दिन उल्लंघन (तजावुज़) न करना और हम ने उन से सख़्त से सख़्त वादा लिया।

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ۭ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا (155)

१५५. ऐसा उन के वादा ख़िलाफ़ी करने और अल्लाह की आयतों के इंकार और बिला वजह रसूलों (ईशदूतों) के क़त्ल करने और उन के इस क़ौल की वजह से हुआ कि हमारे दिल ढके हुये हैं (नहीं) अल्लाह ने उन के कुफ़्र की वजह से उन के दिलों पर मुहर लगा दी है, इसलिये यह थोड़े ही ईमान रखते हैं।

وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ بُهْتَانًا عَظِيْمًا (156)

१५६. और उन के कुफ़्र की वजह और मरियम पर बुहतान लगाने की वजह से।[1]

وَّقَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ

१५७. और उन के यह कहने की वजह से कि हम ने मसीह, मरियम के बेटे ईसा, अल्लाह के रसूल को क़त्ल कर दिया, हालांकि न तो उन्होंने क़त्ल किया न उन्हें फांसी दी[2] लेकिन उन के

---

[1] इस से मुराद युसूफ़ बढ़ई के साथ हज़रत मरियम के ग़लत सम्बन्ध का आरोप (इल्ज़ाम) है, आजकल भी कुछ लोग इस बहुत बड़े गुनाह (इल्ज़ाम) को एक "हक़ीक़त" साबित करने पर तुले हुए हैं और कहते हैं कि यूसुफ़ बढ़ई (अल्लाह की पनाह) हज़रत ईसा के बाप थे। और इस तरह (हज़रत) ईसा के बिना बाप के चमत्कारी जन्म का इंकार करते हैं।

[2] इस से वाज़ेह हुआ कि यहूदी हज़रत ईसा के क़त्ल या फाँसी देने में कामयाब नहीं हुए, जैसेकि सूरः आले इमरान की आयत नं. ५५ की टिप्पणी में मुख़्तसर बयान आ चुका है।

شُبِّهَ لَهُمْ ۚ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ ۚ مَا لَهُم بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًا (157)

लिये शबीह बना दिया गया।[1] यक़ीन करो कि ईसा के बारे में इख़्तिलाफ़ करने वाले उन के बारे में शक में हैं, उन्हें इसका कोई इल्म नही सिवाय गुमान वाली बातों पर काम करने के, इतना तय है कि उन्होंने उनका क़त्ल नही किया।

بَل رَّفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا (158)

१५८. बल्कि अल्लाह (तआला) ने उन्हें अपनी तरफ़ उठा लिया,[2] और अल्लाह ज़बरदस्त हिक्मत वाला है।

وَإِن مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا (159)

१५९. अहले किताब में से कोई ऐसा न बाक़ी बचेगा जो (हज़रत) ईसा (عليه السلام) की मौत से पहले उन पर ईमान न लाये और क़यामत के दिन वह उन पर गवाह होंगे।

فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبَاتٍ أُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَن سَبِيلِ اللَّهِ كَثِيرًا (160)

१६०. यहूदियों के ज़ुल्म की वजह से हम ने उन पर हलाल चीज़ें हराम कर दिया और उन के अल्लाह के रास्ते से ज़्यादा (लोगों) को रोकने की वजह से।

وَأَخْذِهِمُ الرِّبَا وَقَدْ نُهُوا عَنْهُ وَأَكْلِهِمْ أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ۚ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا (161)

१६१. और उन के ब्याज लेने की वजह से जिस से उन्हें रोक दिया गया था, और लोगों का माल नाहक़ लेने से, और हम ने उन में से काफ़िरों के लिये दु:खद अज़ाब तैयार किया है।

---

[1] इसका मतलब यह है कि जब हज़रत ईसा को यहूदियों की योजना का पता चला तो उन्होंने अपने पैरोकारों को, जिनकी तादाद १२ या १७ थी, जमा किया और फ़रमाया कि तुम में से कौन मेरी जगह पर क़ुर्बानी देने को तैयार है? ताकि अल्लाह तआला उसकी शक्लो सूरत मेरी जैसी बना दे, एक नौजवान इसके लिए तैयार हो गया, इसलिए हज़रत ईसा (عليه السلام) को वहाँ से आसमान पर उठा लिया गया, उसके बाद यहूदी आये और उन्होंने उस नौजवान को फाँसी पर चढ़ा दिया, जिसे ईसा की तरह बना दिया गया था, यहूदी यही समझते रहे कि हम ने हज़रत ईसा को फाँसी पर चढ़ा दिया। हक़ीक़त यह है कि हज़रत ईसा वहाँ मौजूद ही नहीं थे, वह ज़िन्दा अपने जिस्म के साथ आसमान पर उठाये जा चुके थे। (इब्ने कसीर और फ़तहुल क़दीर)

[2] यह हक़ीक़त है कि अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत से हज़रत ईसा को ज़िन्दा आसमान पर उठा लिया और मुतवातिर सहीह हदीस से भी इस बात की ताईद होती है। यह हदीसें, हदीस की सभी किताबों के अलावा सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम में लिखी हुई हैं। इन हदीसों से आसमान पर उठा लिए जाने के सिवाय क़ियामत से पहले उनके ज़मीन पर उतरने और दूसरी बातों का बयान है।

१६२. लेकिन उनमें जो कामिल और मजबूत इल्म वाले हैं,[1] और ईमानवाले हैं जो उस पर ईमान लाते हैं, जो आप की तरफ़ उतारा गया, और जो आप से पहले उतारा गया और नमाज़ को क़ायम करने वाले हैं, ज़कात को अदा करने वाले हैं, अल्लाह पर और क़यामत के दिन पर ईमान रखने वाले हैं, यह वह हैं जिन्हें हम बहुत बड़ा बदला अता करेंगे।

لَكِنِ الرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُوْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ وَ الْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ اُولٰٓئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿162﴾

१६३. बेशक हम ने आप की तरफ़ उसी तरह वह्यी की है, जैसे कि नूह (عليه السلام) और उन के बाद के नबियों की तरफ़ हम ने वह्यी की, और इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक़ और याक़ूब और उनकी औलादों पर और ईसा व अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलैमान की तरफ़। और हम ने दाऊद (عليه السلام) को ज़बूर अता की।

اِنَّآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ كَمَآ اَوْحَيْنَآ اِلٰى نُوْحٍ وَّالنَّبِيّٖنَ مِنْۢ بَعْدِهٖ ۚ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَعِيْسٰى وَاَيُّوْبَ وَيُوْنُسَ وَهٰرُوْنَ وَسُلَيْمٰنَ ۚ وَاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿163﴾

१६४. और आप से पहले के बहुत से रसूलों के वाक़ेआत हम ने आप से बयान किये हैं,[2] और बहुत से रसूलों की नहीं भी कीं हैं[3] और मूसा से अल्लाह ने सीधे बात की।

وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ؕ وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰى تَكْلِيْمًا ﴿164﴾

[1] इन से मुराद हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम वग़ैरह हैं, जो यहूदियों में से मुसलमान हुए थे।

[2] जिन रसूलों के नाम और उन के वाक़ेआत क़ुरआन में बयान किये गये हैं, उनकी तादाद २५ है। (१) आदम (२) इदरीस (३) नूह (४) हूद (५) स्वालेह (६) इब्राहीम (७) लूत (८) इस्माईल (९) इसहाक़ (१०) याक़ूब (११) यूसुफ़ (१२) अय्यूब (१३) शुऐब (१४) मूसा (१५) हारून (१६) यूनुस (१७) दाऊद (१८) सुलैमान (१९) इलियास (२०) अल-यसअ (२१) ज़करिया (२२) यहिया (२३) ईसा (२४) ज़ुलकिफ़्ल, ज़्यादातर रावियों के नज़दीक (२५) हज़रत मोहम्मद सलवातुल्लाह व सलामुहू अलैहि व अलैहिम अजमईन।

[3] जिन नबियों और रसूलों के नाम और वाक़ेआत क़ुरआन में बयान नहीं हैं उनकी तादाद कितनी है? अल्लाह तआला ही अच्छी तरह से जानता है। एक हदीस में जो बहुत मशहूर है एक लाख चौबीस हज़ार और एक हदीस में आठ हज़ार बताई गयी है, लेकिन यह क़ौल बहुत कमज़ोर हैं, क़ुरआन और हदीस से सिर्फ़ यही मालूम होता है कि मुख़तलिफ़ वक़्त में और हालतों में ख़ुशख़बरी देने वाले और होशियार करने वाले (नबी) आते रहे हैं, आख़िर में यह नबूवत का सिलसिला हज़रत मोहम्मद ﷺ पर ख़त्म हो गया। आप ﷺ से पहले कितने नबी आये उनकी सही तादाद का इल्म सिर्फ़ अल्लाह को है, आप ﷺ के बाद जितने भी लोग नबूअत का दावा करें वह दज्जाल और झूठे हैं, और उन पर ईमान लाने वाले इस्लाम से बाहर हैं, और मोहम्मद ﷺ की उम्मत से अलग एक मुख़ालिफ़ उम्मत है। जैसे- बहाई, बाबिया और मिर्ज़ाई उम्मत।

رُسُلًا مُّبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ الرُّسُلِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿165﴾

१६५. (हम ने इन्हें) ख़ुशख़बरी और आगाह करने वाला रसूल बनाया, ताकि लोगों को कोई बहाना रसूलों को भेजने के बाद अल्लाह (तआला) पर न रह जाये, और अल्लाह (तआला) बड़ा जबरदस्त और हिक्मत वाला है।

لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَآ اَنْزَلَ اِلَيْكَ اَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ ۚ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ يَشْهَدُوْنَ ۭ وَكَفٰي بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿166﴾

१६६. जो कुछ आप की तरफ़ उतारा है, उस बारे में अल्लाह तआला ख़ुद गवाही देता है कि उसे अपने इल्म से उतारा है, और फ़रिश्ते भी गवाही देते हैं और अल्लाह (तआला) की गवाही बस है।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ قَدْ ضَلُّوْا ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ﴿167﴾

१६७. बेशक जिन्होंने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते (दीन) से रोका वह बहुत दूर भटक गये।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَظَلَمُوْا لَمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيْقًا ﴿168﴾

१६८. बेशक जिन्होंने कुफ़्र किया और ज़ुल्म किया, अल्लाह उन्हें माफ़ नहीं करेगा न उन्हें किसी राह की हिदायत करायेगा।[1]

اِلَّا طَرِيْقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَي اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿169﴾

१६९. लेकिन जहन्नम का रास्ता, जिस में वह हमेशा रहेंगे और यह अल्लाह पर आसान है।

يٰٓاَيُّھَا النَّاسُ قَدْ جَاۗءَكُمُ الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ۭ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿170﴾

१७०. हे लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से सच लेकर रसूल (मुहम्मद ﷺ) आ गये उन पर ईमान लाओ, तुम्हारे लिये बेहतर है और अगर तुम ने इन्कार दिया तो आसमानों और ज़मीन में जो भी है अल्लाह का है और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है।

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَي اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ۭ اِنَّمَا الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ

१७१. हे अहले किताब! अपने दीन में ग़ुलू न करो[2] और अल्लाह के ऊपर सच ही बोलो, बेशक मरियम के बेटे ईसा मसीह सिर्फ़ अल्लाह

[1] क्योंकि लगातार अधर्म (कुफ़्र) और ज़ुल्म करके उन्होंने अपने दिलों को काला कर लिया है, जिस से अब उनकी हिदायत और नजात की कोई उम्मीद की किरण नहीं दिखायी देती।

[2] غلو का मतलब हद से सिवा (किसी चीज को बढ़ा-चढ़ा कर बयान करना) है। जैसे ईसाईयों ने हज़रत ईसा और उनकी माँ के बारे में किया कि उनको रिसालत और बन्दगी के मुक़ाम से उठा कर माबूद के पद पर आसीन कर दिया, और उनकी अल्लाह की तरह इबादत करने लगे, इसी तरह हज़रत ईसा के मानने वालों को भी ग़ुलू का प्रदर्शन करके उन्हें मासूम (प्राकृतिक निष्पाप) बनाकर उन्हें हराम और हलाल बनाने का हक़ दे दिया।

مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ وَكَلِمَتُهٗ ۚ اَلْقٰهَآ اِلٰى مَرْيَمَ وَرُوْحٌ مِّنْهُ ۫ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ وَلَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ ؕ اِنْتَهُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ سُبْحٰنَهٗۤ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ ۘ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا (171)

के रसूल और कलिमा हैं[1] जिसे मरियम की तरफ डाल दिया और उसकी तरफ़ से रूह है, इसलिए अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाओ और न कहो कि अल्लाह तीन हैं,[2] रुक जाओ यह तुम्हारे लिये भला है। बेशक तुम्हारा इलाह सिर्फ़ एक अल्लाह है, वह पाक है इस से कि उसकी कोई औलाद हो, उसी के लिए है जो आसमानों और ज़मीन में है और अल्लाह काम बनाने के लिये काफ़ी है।

لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ؕ وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ جَمِيْعًا (172)

१७२. मसीह अल्लाह के दास होने से कभी भी नफ़रत नहीं करते और न क़रीबी फ़रिश्ते[3] और जो अल्लाह की इबादत से नफ़रत और घमंड करेगा वह उन सभी को अपनी ओर जमा करेगा।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْتَنْكَفُوْا وَاسْتَكْبَرُوْا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا (173)

१७३. तो जो ईमान लाये और नेक काम किये उन्हें उनका पूरा बदला देगा और अपने फ़ज़्ल से और भी ज़्यादा देगा, लेकिन जो नफ़रत किये और घमन्ड किये उन्हें दुःखद अज़ाब देगा और वे अल्लाह के सिवाय अपने लिए कोई वली और मददगार नहीं पायेंगे।

---

[1] अल्लाह के कलिमा का मतलब यह है कि कलिमा كُنْ (हो जा) से बाप के बिना उनकी पैदाईश हुई, और यह कलिमा हज़रत जिब्रील के ज़रिये हज़रत मरियम तक पहुँचाया गया, अल्लाह की रूह का मतलब वह फूँक है, जो हज़रत जिब्रील ने अल्लाह के हुक्म से हज़रत मरियम के गरेबान में फूंका, जिसे अल्लाह तआला ने बाप के मनी की जगह पर बना दिया। इस तरह ईसा अल्लाह के लफ्ज़ भी हैं जो फ़रिश्ते ने हज़रत मरियम की तरफ डाला और उसकी वह रूह हैं जिसे लेकर जिब्रील मरियम की तरफ़ भेजे गये। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[2] इसाईयों के कई गुट हैं, कुछ हज़रत ईसा को अल्लाह, कुछ अल्लाह के साझी और कुछ अल्लाह का बेटा मानते हैं, फिर जो अल्लाह मानते हैं वह तीन अल्लाह के और हज़रत ईसा को तीन में से एक होने पर यक़ीन करते हैं। अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि तीन अल्लाह कहने से रुक जाओ, अल्लाह तआला सिर्फ़ एक है।

[3] हज़रत ईसा की तरह कुछ लोगों ने फ़रिश्तों को भी अल्लाह का साझी बना रखा था, अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि यह सब के सब अल्लाह के बंदे हैं, और इस से उन्हें कभी कोई इंकार नहीं है, तुम उन को अल्लाह या उसकी इबादत में किस बिना पर शरीक करते हो।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ قَدْ جَآءَكُم بُرْهَٰنٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَأَنزَلْنَآ إِلَيْكُمْ نُورًا مُّبِينًا ﴿174﴾

१७४. हे लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की तरफ़ से दलील आ चुकी है[1] और हम ने तुम्हारी तरफ़ नूर (पाक क़ुरआन) उतार दिया है।[2]

فَأَمَّا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ بِٱللَّهِ وَٱعْتَصَمُوا۟ بِهِۦ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِى رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ وَيَهْدِيهِمْ إِلَيْهِ صِرَٰطًا مُّسْتَقِيمًا ﴿175﴾

१७५. फिर जो लोग अल्लाह के ऊपर ईमान लाये और उसे मज़बूती से पकड़ लिया उन्हें अपने फ़ज़्ल और रहमत में दाख़िल करेगा और उन्हें अपने तरफ़ का सीधा रास्ता दिखायेगा।

يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ ٱللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِى ٱلْكَلَٰلَةِ ۚ إِنِ ٱمْرُؤٌا۟ هَلَكَ لَيْسَ لَهُۥ وَلَدٌ وَلَهُۥٓ أُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَآ إِن لَّمْ يَكُن لَّهَا وَلَدٌ ۚ فَإِن كَانَتَا ٱثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا ٱلثُّلُثَانِ مِمَّا تَرَكَ ۚ وَإِن كَانُوٓا۟ إِخْوَةً رِّجَالًا وَنِسَآءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ ٱلْأُنثَيَيْنِ ۗ يُبَيِّنُ ٱللَّهُ لَكُمْ أَن تَضِلُّوا۟ ۗ وَٱللَّهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌۢ ﴿176﴾

१७६. वे आप से सवाल करते हैं, आप कह दें तुम्हें अल्लाह कलाल: के बारे में निर्देश करता है[3] कि अगर किसी मर्द की मौत हो जाये और उस के वारिसों में कोई औलाद न हो और उसकी एक बहन हो तो उस के लिये छोड़े हुए (धन) का आधा है, और वह उस (बहन) का वारिस है अगर उस के कोई औलाद न हो, अगर दो बहनें हों तो दोनों के लिये दो तिहाई है उसमें से जिसे वह छोड़ गया[4] और अगर भाई बहन दोनों हों, मर्द भी और औरतें भी, तो मर्द के लिये दो औरतों के बराबर (हिस्सा) है अल्लाह तुम्हारे लिये बयान कर रहा है ताकि तुम भटक न जाओ और अल्लाह सब कुछ जानने वाला है।

---

1 बुरहान, का मतलब है ऐसा अकाट्य तर्क, जिस के बाद किसी को बहाने का कोई मौक़ा न रहे, ऐसी तरकीब जिस से हर तरह के शुब्हात ख़त्म हो जायें, इसीलिए इसे आगे आसमानी नूर कहा गया है।

2 इस से मुराद पाक क़ुरआन है जो कुफ़्र और शिर्क के अंधेरे में रौशनी है, गुमराही की पगडंडियों पर सीधा रास्ता और अल्लाह तआला की मज़बूत रस्सी है, इसलिए इस के हिसाब से ईमान वाले अल्लाह के फ़ज़्ल और रहमत के मुस्तहिक़ होंगे।

3 कलाल: के बारे में पहले बयान हो चुका है कि उस मरने वाले को कहते हैं, जिनका न बाप हो और न बेटा।

4 यही हुक्म दो से ज़्यादा बहनों की हालत में होगा, यानी यह मतलब हुआ कि अगर कलाल: इंसान की दो या दो से ज़्यादा बहनें होंगी तो उन्हें कुल माल का दो तिहाई मिलेगा।

सूरतुल मायेद:-५

سُورَةُ الْمَائِدَةِ

सूरतुल मायेद: मदीने में उतरी, इस में एक सौ बीस आयतें और सोलह रूकूउ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ أَوْفُوا۟ بِٱلْعُقُودِ ۚ أُحِلَّتْ لَكُم بَهِيمَةُ ٱلْأَنْعَٰمِ إِلَّا مَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّى ٱلصَّيْدِ وَأَنتُمْ حُرُمٌ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيدُ ﴿1﴾

१. हे ईमानवालो! बंधनों (वादों) को पूरा करो, तुम्हारे लिये चौपाये जानवर हलाल कर दिये गये हैं[1] उनके सिवाये जो पढ़कर तुम को सुनाये जाते हैं लेकिन एहराम की हालत में शिकार न करो, बेशक अल्लाह जो चाहता है हुक्म देता है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تُحِلُّوا۟ شَعَٰٓئِرَ ٱللَّهِ وَلَا ٱلشَّهْرَ ٱلْحَرَامَ وَلَا ٱلْهَدْىَ وَلَا ٱلْقَلَٰٓئِدَ وَلَآ ءَآمِّينَ ٱلْبَيْتَ ٱلْحَرَامَ يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِّن رَّبِّهِمْ وَرِضْوَٰنًا ۚ وَإِذَا حَلَلْتُمْ فَٱصْطَادُوا۟ ۚ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَـَٔانُ قَوْمٍ أَن صَدُّوكُمْ عَنِ ٱلْمَسْجِدِ ٱلْحَرَامِ أَن تَعْتَدُوا۟ ۘ وَتَعَاوَنُوا۟ عَلَى ٱلْبِرِّ وَٱلتَّقْوَىٰ ۖ وَلَا تَعَاوَنُوا۟ عَلَى ٱلْإِثْمِ وَٱلْعُدْوَٰنِ ۚ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ ۖ إِنَّ ٱللَّهَ شَدِيدُ ٱلْعِقَابِ ﴿2﴾

२. हे ईमानवालो! अल्लाह के धर्म अनुष्ठानों (शआईर) की बेहुरमती न करो, न हुरमत वाले महीने की,[2] न कुर्बानी के लिये हरम तक ले जाये जा रहे और पट्टा पहनाये जानवर की,[3] न हुरमत वाले घर (कअ्बा) को जा रहे लोगों की, जो अल्लाह की दया और ख़ुशी की खोज कर रहे हैं, और जब एहराम खोलो तो फिर शिकार कर सकते हो, और जिन्होंने तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका उनकी दुश्मनी तुम्हें हुदूद लांघ जाने पर तैयार न करे, और नेकी और परहेज़गारी पर आपस में मदद करो, गुनाह और ज़ुल्म में मदद

---

[1] بهيمة चौपाये जानवर को कहा जाता है, انعام ऊँट, गाय, बकरी और भेड़ को कहा जाता है, क्योंकि इनकी चाल में नर्मी होती है, यह पालतू चौपाये नर और मादा मिलाकर आठ तरह के हैं, जिनकी तफ़सीली जानकारी सूर: अल-अंआम की आयत नं॰ १२४ में आयेगी। इस के सिवाय जो जानवर जंगली कहलाते हैं, जैसे : हिरन, नील गाय आदि, जिनका आम तौर पर शिकार किया जाता है, यह भी जायेज़ हैं, जैसा कि सूर: अल-बक़र: की आयत नं॰ १७३ में तफ़सीली बयान हो चुका है। हाँ नुकीले दाँत वाले वह जानवर जो अपने शिकार को पकड़ कर चीरता हो। जैसे: शेर, चीता, कुत्ता, बिल्ली, भेड़िया आदि नुकीले दाँत वाले जानवर हैं, वह पक्षी जो अपना शिकार पंजे से झपट कर पकड़ता है, जैसे: शिकरा, बाज़, शाहीन, गिद्ध आदि ये सब हराम हैं।

[2] शहरुल हराम से मुराद हुरमत वाले चार महीने (रजब, ज़ुलक़ादा, ज़ुलहिज्जा और मोहर्रम) हैं इन का एहतेराम बाक़ी रखो और उन में क़त्ल न करो, कुछ ने इस से सिर्फ़ एक महीना यानी ज़ुलहिज्जा का महीना (हज का महीना) लिया है।

[3] हदी ऐसे जानवर को कहा जाता है, जो हाजी हरम में कुर्बानी देने के लिए साथ ले जाते थे।

न करो और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह सख़्त अजाब देने वाला है।

३. तुम पर हराम कर दिया गया है मुरदार, और ख़ून, और सूअर का गोश्त और जिस पर अल्लाह के सिवाय दूसरों का नाम पुकारा गया हो[1] और गला घुट कर मरा,[2] और चोट से मरा,[3] और गिरकर मरा[4] और दूसरे जानवर के सींघ मारने से मरा[5] और जिसका कुछ हिस्सा दरिन्दों ने खा लिया हो[6] लेकिन जिसे तुम ने जिब्ह कर दिया,[7] और जो थानों पर जिब्ह किया जाये और पांसे (लाटरी) के जरिये बांटना यह सभी बहुत

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيحَةُ وَمَا أَكَلَ السَّبُعُ إِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَأَنْ تَسْتَقْسِمُوا بِالْأَزْلَامِ ذَٰلِكُمْ فِسْقٌ الْيَوْمَ يَئِسَ

---

[1] यहां से उन हराम (प्रतिबन्धित) चीज़ों का बयान शुरू होता है, जिनका इशारा सूर: के शुरू में दिया गया है। आयत का इतना हिस्सा सूर: अल-बक़र: में गुजर चुका है। (देखिए आयत नं॰ १७३)

[2] गला कोई इंसान घोंट दे या किसी चीज से फंस कर ख़ुद गला घुट जाये, दोनों हालत में मरे हुए जानवर हराम हैं।

[3] किसी ने पत्थर, लाठी या कोई और चीज मारी जिस से वह बिना जिब्ह (इस्लामी तरीक़े के हिसाब से गले पर छुरी चलाना) किये ही मर गया, जाहिलियत के दौर में ऐसे जानवरों को खा लिया जाता था, इस्लामी क़ानून ने मना कर दिया।

बन्दूक़ का शिकार : बन्दूक़ से शिकार किए हुए जानवरों के बारे में आलिमों (इस्लामी धर्मगुरुओं) के बीच एख़्तिलाफ़ है। इमाम शौकानी ने एक हदीस से मतलब निकालते हुए बन्दूक़ के शिकार को जायज माना है। (फ़तहुल क़दीर) यानी अगर बिस्मिल्लाह पढ़ कर गोली चलायी गयी और शिकार जिब्ह करने से पहले ही मर गया तो उसका खाना इस क़ौल के एतबार से जायज है।

[4] चाहे वह ख़ुद गिरा हो या किसी ने पहाड़ आदि (वग़ैरह) से धक्का देकर गिराया हो।

[5] نطيحة कलिमा منطوحة के मतलब में है, यानी किसी ने उसे टक्कर मार दी और बिना जिब्ह किये वह मर गया।

[6] यानी शेर, चीता और भेड़िया जैसे दरिन्दों ने उसे खाया हो और वह मर गया हो, दौरे जाहिलियत में मर जाने के बावजूद ऐसे जानवरों को खा लिया जाता था।

[7] आम रावियों के नजदीक यह छूट सभी बयान किये जानवरों के लिए है यानी गला घोंटने से चोट के जरिये घायल, ऊँचे मुक़ाम से गिरने से या टक्कर के जरिये या किसी दरिन्दे से घायल जानवर, अगर तुम इस हालत में पाओ कि उनमें जिन्दगी की किरण पायी जाती हो और फिर तुम उसे इस्लामी क़ानून के हिसाब से जिब्ह कर लो, तो फिर तुम्हारे लिए खाना जायेज होगा।

الَّذِينَ كَفَرُوا مِن دِينِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ ۚ الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ فِي مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِّإِثْمٍ ۙ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣﴾

बड़े गुनाह हैं। आज काफ़िर (मूर्तिपूजक) तुम्हारे दीन की तरफ़ से मायूस हो गये, इसलिए उनसे न डरो सिर्फ़ मुझ से डरो, आज मैंने तुम्हारे लिये तुम्हारे दीन को मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेमतें पूरी कर दी और तुम्हारे लिये इस्लाम दीन को पसन्द कर लिया, लेकिन जो भूख में बेक़रार हो जाये और कोई गुनाह न करना चाहता हो तो बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, बड़ा रहम करने वाला है।[1]

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا أُحِلَّ لَهُمْ ۖ قُلْ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ ۙ وَمَا عَلَّمْتُم مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِينَ تُعَلِّمُونَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللَّهُ ۖ فَكُلُوا مِمَّا أَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهِ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٤﴾

४. वह आप (रसूल) से सवाल करते हैं कि उन के लिये क्या (खाना) जायज़ है आप कह दें कि तुम्हारे लिये पाक चीज़ें जायज़ हैं, और वह शिकारी जानवर जो तुम ने सधा रखे हों जिन को कुछ बातें सिखाते हो जो अल्लाह ने तुम्हें सिखलाई, तो अगर तुम्हारे लिये वह (शिकार) को दबोच रखें और उसे छोड़ते समय अल्लाह का नाम उस पर लो तो उसे (शिकार को) खाओ,[2] और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।

الْيَوْمَ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ ۖ وَطَعَامُ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ حِلٌّ لَّكُمْ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ ۖ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ

५. आज सभी पाक चीज़ें तुम्हारे लिए हलाल कर दी गयीं और अहले किताब का ज़बीहा तुम्हारे लिये हलाल है[3] और तुम्हारा ज़बीहा उनके लिये जायज़ है, और पाक दामन मुसलमान औरतें

---

[1] यह भूख की बेक़रारी की हालत में हराम खाने की इजाज़त है, लेकिन इस के ज़रिये अल्लाह की नाफ़रमानी और हुदूद तोड़ने का इरादा न हो, सिर्फ़ जान बचाना ही मक़सद हो।

[2] ऐसे सिखाये हुए जानवरों का शिकार किया हुआ जानवर दो शर्तों के साथ जायेज़ है, एक यह कि उसे शिकार पर छोड़ते समय बिस्मिल्लाह पढ़ लिया गया हो, दूसरा यह कि शिकारी जानवर शिकार करके अपने मालिक के लिए रख छोड़े और उसका इंतेज़ार करे, ख़ुद न खाये। अगरचे उसने उसे मार भी डाला हो, तब भी वह मरा हुआ शिकार किया हुआ जानवर जायेज़ होगा, जबकि उस के शिकार के लिए सिखाये और छोड़े हुए जानवर के सिवाय किसी दूसरे जानवर को शामिल न किया हो। (सहीह बुख़ारी, कितुज़्ज़बाएहे वस्सैदे-मुस्लिम किताबुस्सैदे)

[3] अहले किताब का वही ज़िब्ह किया जानवर जायेज़ होगा जिसमें ख़ून बह गया होगा, यानी उनका मशीन के ज़रिये ज़िब्ह जायेज़ नहीं है, क्योंकि इस में ख़ून का बहना जो ज़रूरी है पाया नहीं जाता।

اَلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ مُحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْٓ اَخْدَانٍ ۭ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ ۡ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ⑤

और जो तुम से पहले किताब (धर्मशास्त्र) दिये गये उन में से पाक दामन औरतें[1] जब तुम उन्हें उनकी महर दे दो, शादी करके बदकारी के लिये नहीं और न गुप्त प्रेमी बनाने के लिये, और जो ईमान को नकार दे उसका अमल बेकार हो गया, और वह आख़िरत में घाटे में रहेगा।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ ۭ وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا ۭ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَوْ عَلٰي سَفَرٍ

६. हे ईमानवालो ! जब तुम नमाज़ के लिये उठो तो अपने मुँह और कोहनियों तक अपने हाथों को धो लिया करो[2] और अपने सिर का मसह (दोनो हाथ तर करके सिर पर फेरना) कर लो[3] और अपने पाँव टखनों तक धुल लो,[4] और अगर तुम नापाक हो तो ग़ुस्ल कर लो,[5] और अगर

---

[1] अहले किताब की औरतों के साथ शादी की इजाज़त के साथ एक तो पाक दामन ज़रूरी है, जो आजकल ज़्यादातर अहले किताब औरतों में नहीं मिलता है, दूसरे उस के बाद यह कहा गया है कि जो ईमान के साथ कुफ़्र करे, उसके आमाल बर्बाद हो गये। इस से यह तंबीह करना है कि अगर ऐसी औरत से शादी करने से ईमान के बर्बाद होने का डर है, तो यह बहुत नुक़सान वाली तिजारत है, और आजकल अहले किताब की औरतों से शादी करने में ईमान को जो ख़तरा है, उस के बयान की ज़रूरत नहीं।

[2] "मुहँ धोओ," यानी एक-एक, दो-दो या तीन-तीन बार दोनों हाथ कलाईयों तक धोने, कुल्ली करने, नाक में पानी डालकर छींकने के बाद, जैसाकि हदीस से साबित है, मुँह धोने के बाद हाथों को कोहनियों तक धोया जाये।

[3] मसह (यानी दोनों हाथ भींगा कर सर पर फेरना) पूरे सिर का किया जाये, जैसाकि हदीस से साबित है, "अपने हाथ आगे से पीछे (गुद्दी) तक ले जाये और फिर वापस वहाँ से आगे लाये जहाँ से शुरू किया था।" इसी के साथ कानों का मसह कर ले, अगर सिर पर पगड़ी या मुरेठा हो तो हदीस के हिसाब से मोजों की तरह उस पर भी मसह जायेज़ है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल तहारः) इस तरह एक बार मसह कर लेना काफ़ी है।

[4] أرجلكم का लगाव وجوهكم से है, यानी अपने पैर टखनों तक धुलो, और अगर मोजे या इस तरह के दूसरे कपड़े पैरों पर चढ़े हों तो (जबकि वज़ू की हालत में पहना हो) सहीह हदीस के अनुसार पैर धोने के बजाय मोजों आदि पर मसह भी जायेज़ है।

[5] नापाकी से मुराद वह नापाकी है जो एहतिलाम या बीवी से जिमाअ के वजह से होती है, और इसी हुक्म में माहवारी और प्रसव रक्त भी है, माहवारी और प्रसव रक्त रुक जाये तो पाकी के लिए ग़ुस्ल करना फ़र्ज़ है, लेकिन पानी न मिलने की हालत में तयम्मुम की इजाज़त है। (फ़तहुल क़दीर और ऐसरुत्तफ़ासीर)

أَوْ جَآءَ أَحَدٌ مِّنكُم مِّنَ ٱلْغَآئِطِ أَوْ لَٰمَسْتُمُ ٱلنِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوا مَآءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَٱمْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُم مِّنْهُ ۚ مَا يُرِيدُ ٱللَّهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُم مِّنْ حَرَجٍ وَلَٰكِن يُرِيدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ (6)

तुम बीमार या सफ़र पर हो, या तुम में से कोई शौचालय से आये या तुम बीवी से मिले हो और पानी न मिले तो पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लो उसे अपने चेहरों और हाथों पर मलो, अल्लाह तुम पर तंगी नहीं चाहता, लेकिन तुम्हें पाक बनाना चाहता है और ताकि तुम पर अपनी नेमत पूरी करे और ताकि तुम शुक्रगुजार रहो।

وَٱذْكُرُوا نِعْمَةَ ٱللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمِيثَٰقَهُ ٱلَّذِى وَاثَقَكُم بِهِۦٓ إِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۖ وَٱتَّقُوا ٱللَّهَ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلِيمٌۢ بِذَاتِ ٱلصُّدُورِ (7)

७. और अपने ऊपर अल्लाह की नेमत और उस अहद को याद करो जिसका तुम से मुआहिदा हुआ, जब तुम ने कहा कि हम ने सुना और मान लिया और अल्लाह (तआला) से डरते रहो, बेशक अल्लाह (तआला) दिलों की बातों का जानकार है

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا كُونُوا قَوَّٰمِينَ لِلَّهِ شُهَدَآءَ بِٱلْقِسْطِ ۖ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَـَٔانُ قَوْمٍ عَلَىٰٓ أَلَّا تَعْدِلُوا ۚ ٱعْدِلُوا هُوَ أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ ۖ وَٱتَّقُوا ٱللَّهَ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ خَبِيرٌۢ بِمَا تَعْمَلُونَ (8)

८. हे ईमानवालो! अल्लाह के लिये सच पर मजबूत, इंसाफ़ पर गवाह हो जाओ, और किसी क़ौम की दुश्मनी तुम्हें इंसाफ़ न करने पर तैयार न करे, इंसाफ़ करो वह परहेजगारी से बहुत क़रीब है और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाख़बर है।

وَعَدَ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا ٱلصَّٰلِحَٰتِ ۙ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ (9)

९. जिन्होंने यक़ीन किया और नेक अमल किये अल्लाह ने उनको माफ़ और भारी बदला का वायेदा दिया है।

وَٱلَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِـَٔايَٰتِنَآ أُولَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ ٱلْجَحِيمِ (10)

१०. और जिन्होंने यक़ीन नही किया और हमारे हुक्मों को झुठलाया वही जहन्नमी हैं।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا ٱذْكُرُوا نِعْمَتَ ٱللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ هَمَّ قَوْمٌ أَن يَبْسُطُوٓا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنكُمْ ۖ وَٱتَّقُوا ٱللَّهَ ۚ وَعَلَى ٱللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ ٱلْمُؤْمِنُونَ (11)

११. ऐ ईमानवालों! अल्लाह (तआला) ने जो एहसान तुम पर किये हैं उसे याद करो, जब कि एक क़ौम ने तुम पर ज़ुल्म करना चाहा तो अल्लाह (तआला) ने उन के हाथों को तुम तक पहुँचने से रोक दिया, और अल्लाह (तआला) से डरते रहो और ईमानवालों को अल्लाह तआला पर ही भरोसा करना चाहिए।

وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۚ وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيْبًا ۭ وَقَالَ اللّٰهُ اِنِّىْ مَعَكُمْ ۭ لَىِٕنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَاٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ وَاٰمَنْتُمْ بِرُسُلِيْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَاَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاۗءَ السَّبِيْلِ (12)

१२. और अल्लाह तआला ने इस्राईल के बेटों से वादा लिया और उन्हीं में से बारह सरदार हम ने मुक़र्रर किये,[1] और अल्लाह (तआला) ने फ़रमा दिया, मैं बेशक तुम्हारे साथ हूं, अगर तुम नमाज़ क़ायम रखोगे, और ज़कात देते रहोगे और मेरे रसूलों को मानते रहोगे और उनकी मदद करते रहोगे और अल्लाह (तआला) को बेहतर क़र्ज़ देते रहोगे, तो बेशक मैं तुम्हारी बुराईयाँ तुम से दूर रखूंगा और तुम्हें उन जन्नतों में ले जाऊंगा जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, अब इस वादा के बाद भी तुम में से जो इंकार करे, वह बेशक सीधे रास्ते से भटक गया।

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ لَعَنّٰهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ قٰسِيَةً ۚ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۚ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلٰي خَاۗىِٕنَةٍ مِّنْهُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ (13)

१३. फिर उन के वादा तोड़ने के सबब हम ने उन पर लानत किया और उन के दिल सख़्त कर दिये कि वह कलिमा को उन के उस जगह से तबदील कर देते हैं,[2] और जो कुछ नसीहत उन को दी गयी उसका बहुत बड़ा हिस्सा भुला बैठे, उन के एक न एक ख़यानत की ख़बर तुझे मिलती रहेगी, लेकिन थोड़े से (लोग) ऐसे नहीं भी हैं, फिर भी उन्हें माफ़ करता जा और माफ़ करता जा, बेशक अल्लाह तआला एहसान करने वालों को दोस्त रखता है।

[1] यह उस समय का वाक़ेआ है, जब हज़रत मूसा जबाबर: से जंग के लिए तैयार हुए तो उन्होंने अपनी उम्मत के बारह जातियों के बारह संरक्षक नियुक्त कर दिये ताकि वे उन्हें जंग के लिए तैयार भी करें, और अगुवाई भी करें और दूसरे मुआमलात का एहतेमाम भी करें।

[2] यानी इतने इंतेज़ाम और वादे के बावजूद भी इस्राईल की औलाद ने वादा तोड़ दिया, जिस के सबब वे अल्लाह के लानती हुए, इस लानत का दुनियावी नतीजा यह हुआ कि उन के दिल सख़्त कर दिये गये, जिस से उन के दिल असरअंदाज़ होने से महरूम हो गये और नबियों की तक़रीर और तालीम उन के लिए बेकार हो गयी।

وَمِنَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصَارَى أَخَذْنَا مِيثَاقَهُمْ فَنَسُوا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوا بِهِ فَأَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۚ وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللَّهُ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ (14)

१४. और जो अपने आप को इसाई कहते हैं, हम ने उन से (भी) वादा लिया था, उन्होंने भी उसका बड़ा हिस्सा भुला दिया, जो उन्हें शिक्षा दी गयी थी, तो हम ने भी उन के बीच दुश्मनी और नफ़रत डाल दिया जो क़यामत तक रहेगी।[1] और जो कुछ यह करते हैं जल्द ही अल्लाह तआला उन्हें सब बता देगा।

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيرًا مِّمَّا كُنتُمْ تُخْفُونَ مِنَ الْكِتَابِ وَيَعْفُو عَن كَثِيرٍ ۚ قَدْ جَاءَكُم مِّنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُّبِينٌ (15)

१५. हे अहले किताब! तुम्हारे पास हमारे रसूल (मुहम्मद! ﷺ) आ गये जो बहुत सी वह बातें बता रहे हैं जो किताब (तौरात और इंजील) की बातें तुम छुपा रहे थे[2] और बहुत-सी बातों को छोड़ रहे हैं, तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से नूर और खुली किताब (पाक क़ुरआन) आ चुकी है।[3]

---

[1] यह अल्लाह को दिये गये वादे के ख़िलाफ़ अमल करने की वह सज़ा है, जो अल्लाह तआला की तरफ़ से उन पर क़ियामत तक के लिए थोप दी गयी है, इसलिए इसाईयों के कई गुट हैं जो एक-दूसरे से बहुत नफ़रत और हसद रखते हैं, एक-दूसरे को काफ़िर कहते हैं और एक-दूसरे की इबादतगाहों में इबादत नहीं करते, लगता है कि मुसलमानों पर भी यह दण्ड थोप दिया गया है, यह क़ौम भी कई गुटों में बंट गई है, जिन के बीच बहुत ज़्यादा इख़्तिलाफ़ हैं और नफ़रत व हसद की दीवार खड़ी है।

[2] यानी उन्होंने तौरात और इंजील में जो तबदीली की और उलट फेर किये उन्हें उजागर किया और जिनको छिपाते थे उन्हे ज़ाहिर किया, जैसे पत्थर से मारने की सज़ा, जैसा कि हदीस में इसकी तफ़सीली जानकारी मिलती है।

[3] ‹नूर और खुली किताब› दोनों से मुराद एक ही ‹क़ुरआन करीम› है, इनके बीच अरबी लफ़्ज़ वॉव (و) तफ़सीर के लिए है, लेकिन दोनों से मुराद एक यानी पाक क़ुरआन ही है, जिसका वाज़ेह सुबूत क़ुरआन करीम की अगली आयत है जिसमें कहा जा रहा है يهدي به الله "कि इस के ज़रिये अल्लाह तआला हिदायत देता है, अगर नूर और किताब दो होते तो कलिमा इस तरह होते يهدي بهما الله अल्लाह तआला इन दोनों के ज़रिये हिदायत देता है," लेकिन ऐसा नहीं है। इसलिए क़ुरआन करीम के इन लफ़्ज़ों से यह वाज़ेह हो गया कि नूर और खुली किताब दोनों का मतलब एक ही यानी क़ुरआन करीम है, यह नहीं कि नूर से नबी करीम ﷺ और खुली किताब से पाक क़ुरआन का मतलब है, जैसाकि इस्लाम मज़हब में नई बातें गढ़ने वालों ने गढ़ लिया है।

يَهْدِي بِهِ اللَّهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهُ سُبُلَ السَّلَامِ وَيُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ بِإِذْنِهِ وَيَهْدِيهِمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ (16)

१६. जिस के जरिये अल्लाह उन्हें सलामती का रास्ता दिखाता है जो उसकी ख़ुशी की पैरवी करें और उन्हें अंधेरे से अपनी रहमत से नूर की तरफ़ निकाल लाता है और उन्हें सीधा रास्ता दिखाता है।

لَّقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قُلْ فَمَن يَمْلِكُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ أَن يُهْلِكَ الْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ وَمَن فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ۗ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ (17)

१७. बेशक वह लोग काफ़िर हो गये जिन्होंने कहा कि मरियम का बेटा मसीह अल्लाह है। कह दो कि अगर मरियम का बेटा मसीह और उसकी मां और दुनिया के सभी लोगों को वह हलाक करना चाहे तो कौन है जिसका अल्लाह के सामने ज़रा भी हक़ है? और आसमानों और ज़मीन और जो दोनों के बीच है अल्लाह ही का मुल्क है, वह जो (भी) चाहे पैदा करता है और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।

وَقَالَتِ الْيَهُودُ وَالنَّصَارَىٰ نَحْنُ أَبْنَاءُ اللَّهِ وَأَحِبَّاؤُهُ ۚ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُم بِذُنُوبِكُم ۖ بَلْ أَنتُم بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ۚ يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۚ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ (18)

१८. और यहूदी और इसाई कहते हैं कि हम अल्लाह के बेटे और दोस्त हैं।[1] आप कह दीजिए कि फिर अल्लाह (तआला) तुम्हारे गुनाहों के सबब तुम्हें सज़ा क्यों देता है ? नहीं बल्कि तुम उसकी मख़लूक़ में एक इंसान हो, वह जिसे चाहता है माफ़ करता है और जिसे चाहता है सज़ा देता है और अल्लाह (तआला) की मिल्कियत आसमानों और ज़मीन पर और उनके बीच जो कुछ है हर चीज़ पर है और उसी की ओर पलट कर आना है।

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلَىٰ فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ أَن تَقُولُوا مَا جَاءَنَا مِن بَشِيرٍ وَلَا نَذِيرٍ ۖ فَقَدْ جَاءَكُم بَشِيرٌ وَنَذِيرٌ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ (19)

१९. हे अहले किताब! रसूलों के आने में एक विलम्ब (वक़्फ़े) के बाद हमारा रसूल (मुहम्मद ﷺ) आ चुका है जो तुम्हारे लिये (धर्म विधानों) को बयान कर रहा है ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास कोई ख़ुशख़बरी देने वाला और आगाह करने वाला नहीं आया तो तुम्हारे पास एक ख़ुशख़बरी देने वाला और सतर्क (आगाह)

[1] यहूदियों ने हज़रत उज़ैर को और इसाईयों ने हज़रत ईसा को अल्लाह का बेटा कहा और ख़ुद को भी अल्लाह का बेटा और उसका प्यारा समझने लगे।

करने वाला (आख़िरी रसूल) आ गया है,[1] बेशक अल्लाह हर चीज पर क़ादिर है।

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ يَٰقَوْمِ ٱذْكُرُوا۟ نِعْمَةَ ٱللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَعَلَ فِيكُمْ أَنۢبِيَآءَ وَجَعَلَكُم مُّلُوكًا وَءَاتَىٰكُم مَّا لَمْ يُؤْتِ أَحَدًا مِّنَ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿20﴾

२०. और याद करो जब मूसा (عليه السلام) ने अपनी क़ौम से कहा हे मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह (तआला) के उस एहसान को याद करो कि उस ने तुम में से पैग़म्बर बनाये और तुम्हें मुल्क अता किया,[2] और तुम्हें वह अता किया जो सारी दुनिया में किसी को अता नहीं किया।

يَٰقَوْمِ ٱدْخُلُوا۟ ٱلْأَرْضَ ٱلْمُقَدَّسَةَ ٱلَّتِى كَتَبَ ٱللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوا۟ عَلَىٰٓ أَدْبَارِكُمْ فَتَنقَلِبُوا۟ خَٰسِرِينَ ﴿21﴾

२१. मेरी क़ौम वालो! उस पाक जमीन में दाख़िल हो, जो अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे नाम लिख दी है,[3] और अपनी पीठ न दिखाओ[4] कि नुक़सान में पड़ जाओगे।

قَالُوا۟ يَٰمُوسَىٰٓ إِنَّ فِيهَا قَوْمًا جَبَّارِينَ وَإِنَّا لَن نَّدْخُلَهَا حَتَّىٰ يَخْرُجُوا۟ مِنْهَا فَإِن يَخْرُجُوا۟ مِنْهَا فَإِنَّا دَٰخِلُونَ ﴿22﴾

२२. उन्होंने जवाब दिया हे मूसा! वहाँ तो ताक़तवर लड़ाकू लोग हैं और जब तक वह वहाँ से निकल न जायें, हम तो कभी भी नहीं जायेंगे, अगर वे वहाँ से निकल जायें तो हम (ख़ुशी से) वहाँ चले जायेंगे।

[1] हजरत ईसा और हजरत मोहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ के बीच के वक़्त में जो लगभग ५७० साल का फ़र्क है, यह फ़र्क एक अवकाश (वक़्फ़ा) कहलाता है। अहले किताब से कहा जा रहा है कि इस अवकाश के बाद हम ने अपने आख़िरी रसूल (ﷺ) को भेज दिया है, अब तुम यह भी न कह सकोगे कि हमारे पास कोई ख़ुशख़बरी देने वाला और बाख़बर करने वाला पैग़म्बर ही नहीं आया।

[2] ज्यादातर नबी इस्राईल की औलादों में हुये है जिनका सिलसिला हजरत ईसा पर ख़त्म कर दिया गया और पैग़म्बर मुहम्मद इस्माईल की औलाद से हुए -ﷺ। इसी तरह कई बादशाह भी इस्राईल की औलाद में हुए और कुछ नबियों को भी अल्लाह तआला ने मुल्क अता किया, जैसे हजरत सुलेमान (عليه السلام)।

[3] इस से मुराद जीत है, जिस का वादा अल्लाह तआला ने जिहाद की शक्ल में उन से कर रखा था।

[4] यानी जिहाद से मुँह न मोड़ो।

२३. लेकिन जो अल्लाह से डर रहे थे उन में से दो मर्दों ने कहा जिन पर अल्लाह ने इंआम किया कि तुम उन पर दरवाज़े से दाख़िल हो जाओ, जब दाख़िल हो जाओगे तो तुम्ही ग़ालिब रहोगे और अगर ईमान रखते हो तो अल्लाह ही पर भरोसा रखो ।[1]

قَالَ رَجُلَانِ مِنَ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوْا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۚ فَاِذَا دَخَلْتُمُوْهُ فَاِنَّكُمْ غٰلِبُوْنَ ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ (23)

२४. उन्होंने कहा कि हे मूसा ! हम कभी भी वहाँ न जायेंगे जब तक वह उसमें रहेंगे, इसलिए तुम और तुम्हारा रब जाकर दोनों लड़ो हम यहीं बैठे हैं ।

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَآ اَبَدًا مَّا دَامُوْا فِيْهَا فَاذْهَبْ اَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَآ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ (24)

२५. उस (मूसा) ने कहा मेरे रब ! मैं सिर्फ़ ख़ुद पर और अपने भाई (हारून) पर हक़ रखता हूँ इसलिए हमारे और फ़ासिकों के बीच अलगाव कर दे ।[2]

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ لَآ اَمْلِكُ اِلَّا نَفْسِيْ وَاَخِيْ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ (25)

२६. उस (अल्लाह) ने कहा यह चालीस साल तक उन पर हराम है, वह धरती में घूमते फिरते रहेंगे[3] इसलिए आप (मूसा) फ़ासिकों पर अफ़सोस न करें ।

قَالَ فَاِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۚ يَتِيْهُوْنَ فِي الْاَرْضِ ۭ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ (26)

---

[1] मूसा की क़ौम में सिर्फ़ यही दो इंसान निकले जिन्हें अल्लाह तआला की तरफ़ से मदद पर यक़ीन था, उन्होंने क़ौम को समझाया कि तुम हिम्मत तो करो, तो फिर देखो कि अल्लाह तआला किस तरह कामयाबी अता करता है ।

[2] इस में फ़ासिक़ क़ौम के सामने अपनी मजबूरी का इज़हार भी है, और उन से अलग होने का एलान भी ।

[3] यह तीह का मैदान कहलाता है, जिस में चालीस साल यह लोग अपनी नाफ़रमानी और जिहाद से इंकार के कारण फिरते रहे, फिर भी इस मैदान में अल्लाह ने उन्हें खाने के लिये मन्न (एक तरह की मीठी गोंद) और सल्वा (एक तरह की चिड़िया) उतारे, जिस से उकताकर उन्होंने अपने रसूल से कहा कि रोज़ एक तरह के खाने से हमारा मन भर गया, इसलिए अपने रब (अल्लाह) से दुआ करो कि वह कई तरह की वनस्पतियाँ और दालें हमारे लिये उपजाये, यहीं उन पर बादलों ने छाया की, पत्थर पर हज़रत मूसा के लाठी मारने से बारह जातियों के लिये बारह चश्मे जारी हुये, ऐसे ही दूसरे मोजिज़े भी होते रहे, चालीस साल बाद फिर ऐसी हालत पैदा की गई कि यह बैतुल मक़दिस में दाख़िल हुए ।

२७. और आदम के दो बेटों की सच्ची कहानी उन्हें पढ़कर सुना दो[1] जबकि दोनों ने एक-एक क़ुर्बानी भेंट दी तो एक से क़ुबूल की गई और दूसरे से क़ुबूल नहीं की गयी[2] तो उस ने कहा कि मैं तुझे ज़रूर मार डालूँगा तो उस ने कहा कि अल्लाह परहेज़गारों से ही क़ुबूल करता है।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَيْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ ۘ اِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ اَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْاٰخَرِ ؕ قَالَ لَاَقْتُلَنَّكَ ؕ قَالَ اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿27﴾

२८. अगर तू मुझे क़त्ल करने के लिये हाथ बढ़ायेगा तो मैं तुझे क़त्ल करने के लिए हाथ नहीं बढ़ा सकता, मैं अल्लाह सारी दुनिया के रब से डरता हूँ।

لَئِنْۢ بَسَطْتَّ اِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِيْ مَاۤ اَنَا بِبَاسِطٍ يَّدِيَ اِلَيْكَ لِاَقْتُلَكَ ۚ اِنِّيْۤ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿28﴾

२९. मैं चाहता हूँ कि तू मेरा गुनाह और अपना गुनाह समेट ले और जहन्नमियों में हो जाये, और यही ज़ालिमों का बुरा बदला है।

اِنِّيْۤ اُرِيْدُ اَنْ تَبُوْٓاَ بِاِثْمِيْ وَاِثْمِكَ فَتَكُوْنَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۚ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿29﴾

३०. बस उसकी इच्छाओं ने उसे भाई का क़त्ल करने के लिए तैयार कर दिया और उस ने उस का क़त्ल कर दिया, जिस से वह नुक़सान उठाने वालों में हो गया।

فَطَوَّعَتْ لَهٗ نَفْسُهٗ قَتْلَ اَخِيْهِ فَقَتَلَهٗ فَاَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿30﴾

३१. फिर अल्लाह (तआला) ने एक कव्वे को भेजा जो धरती खोद रहा था कि उसे दिखाये कि वह अपने भाई की लाश (शव) को किस तरह छिपा दे, वह कहने लगा हाय अफ़सोस ! क्या मैं ऐसा करने के लायक़ भी न रहा कि अपने भाई की लाश को इस कौए की तरह गाड़ सकता? फिर तो वह बड़ा दुखी और शर्मिन्दा हो गया।

فَبَعَثَ اللّٰهُ غُرَابًا يَّبْحَثُ فِي الْاَرْضِ لِيُرِيَهٗ كَيْفَ يُوَارِيْ سَوْءَةَ اَخِيْهِ ؕ قَالَ يٰوَيْلَتٰۤى اَعَجَزْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِثْلَ هٰذَا الْغُرَابِ فَاُوَارِيَ سَوْءَةَ اَخِيْ ۚ فَاَصْبَحَ مِنَ النّٰدِمِيْنَ ﴿31﴾

---

[1] आदम के इन दो बेटों का नाम हाबील और क़ाबील था।

[2] यह चढ़ावा या क़ुर्बानी किसलिए पेश की गयी? इस के बारे में कोई सही क़ौल नहीं है, लेकिन यह ज़रूर मशहूर है कि आदम ﷺ के दो बेटों ने अल्लाह के लिए क़ुर्बानी की, एक की क़ुबूल हुई दूसरे की नहीं, इसलिए दूसरा हसद का शिकार हो गया और अपने भाई को मार डाला।

مِنْ اَجْلِ ذٰلِكَ ۚۛ كَتَبْنَا عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَنَّهٗ مَنْ قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِي الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَمَنْ اَحْيَاهَا فَكَاَنَّمَآ اَحْيَا النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ فِي الْاَرْضِ لَمُسْرِفُوْنَ ﴿32﴾

३२. इसी कारण हम ने इस्राईल की औलाद पर लिख दिया कि जो इंसान किसी को बिना इस के कि वह किसी का क़ातिल हो या धरती पर फ़साद पैदा करने वाला हो, क़त्ल कर डाले तो ऐसा है कि उस ने सभी लोगों को क़त्ल कर दिया, और जो इंसान एक की जान बचाये, उस ने मानो सभी लोगों को जिन्दा कर दिया[1] और उन के पास हमारे रसूल बहुत-सी वाज़ेह निशानियाँ लेकर आये, लेकिन फिर भी उन में से ज़्यादातर लोग धरती पर ज़ुल्म (और ज़्यादती और क्रूरता) करने वाले ही रहे।

اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ يُّقَتَّلُوْٓا اَوْ يُصَلَّبُوْٓا اَوْ تُقَطَّعَ اَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ مِّنْ خِلَافٍ اَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِ ؕ ذٰلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿33﴾

३३. उनकी सज़ा जो अल्लाह (तआला) से और उसके रसूल से लड़ें और धरती पर फ़साद करें यही है कि वे मार दिये जायें या फाँसी पर चढ़ा दिये जायें या उलटी तरफ़ से उन के हाथ पैर काट दिये जायें, या उन्हें देश से निकाल दिया जाये, यह तो हुई उन की दुनियावी ज़िल्लत और बेइज़्ज़ती और आख़िरत में उनके लिए भारी अज़ाब है।

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهِمْ ۚ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿34﴾

३४. लेकिन जो अपने ऊपर तुम्हारे क़ाबू पाने से पहले माफ़ी माँग लें, तो बेशक अल्लाह तआला बड़ा माफ़ करने वाला, बड़ा रहम व करम करने वाला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَجَاهِدُوْا فِيْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿35﴾

३५. हे मुसलमानों! अल्लाह तआला से डरते रहो और उसकी ओर नज़दीकी हासिल करने की कोशिश करो।[2] और उसकी राह में जिहाद करो ताकि तुम्हारी भलाई हो।

[1] इस नाजायेज क़त्ल के बाद अल्लाह तआला ने इंसानों की क़ीमत को ज़ाहिर करने के लिये इस्राईल की औलाद को यह हुक्म उतारा, इस से अनुमान लगाया जा सकता है कि अल्लाह तआला के यहाँ इंसानों की कितनी अहमियत है।

[2] वसीला (وسيلة) का मतलब ऐसी चीज है जो किसी मक़सद को हासिल और उसकी नज़दीकी का ज़रिया बने, "अल्लाह तआला की नज़दीकी हासिल करने का सबब तलाश करो" का मतलब होगा कि ऐसे अमल करो जिस से तुम्हें अल्लाह की ख़ुशी और उसकी नज़दीकी हासिल हो। इमाम शौकानी का क़ौल है : "वसीला वह नेक अमल हैं जिन के ज़रिये से बन्दा अल्लाह की नज़दीकी हासिल करते हैं।" इसी तरह मना करदा और हराम चीज़ों और कामों से बचने से भी अल्लाह की नज़दीकी हासिल होती है, इसलिए मना करदा और हराम चीज़ों और कामों को छोड़ना भी अल्लाह की नज़दीकी हासिल करने का ज़रिया है, लेकिन बेवक़ूफ़ों (मूर्खों) ने इस हक़ीक़ी ज़रिया को छोड़ कर क़ब्र में गड़े लोगों को अपना ज़रिया बना लिया है, जिसका इस्लामी क़ानून में कोई जगह नहीं है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لِيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ (36)

३६. यक़ीन करो, कि काफ़िरों के लिए अगर वह सब कुछ हो जो सारी धरती में है, और उस के बराबर और ज़्यादा भी हो और वह उन सब को क़यामत के दिन के अज़ाब के बदले फ़िदिया में देना चाहें तो भी असम्भव है कि उन से क़ुबूल कर लिया जाये, उन के लिए तो दुखदायी अज़ाब है।

يُرِيدُونَ أَن يَخْرُجُوا مِنَ النَّارِ وَمَا هُم بِخَارِجِينَ مِنْهَا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ (37)

३७. वे चाहेंगे कि जहन्नम से निकल जायें, लेकिन वे कभी भी उस में से न निकल सकेंगे, उन के लिए तो दायमी अज़ाब है।[1]

وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوا أَيْدِيَهُمَا جَزَاءً بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ (38)

३८. चोर और चोरनी का हाथ काट दो,[2] यह उनके करतूत का बदला और अल्लाह की तरफ़ से सज़ा है, और अल्लाह तआला ताक़तवाला और हिक्मत वाला है।

فَمَن تَابَ مِن بَعْدِ ظُلْمِهِ وَأَصْلَحَ فَإِنَّ اللَّهَ يَتُوبُ عَلَيْهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ (39)

३९. जो अपने गुनाह के बाद माफ़ी माँग ले और सुधार कर ले, तो अल्लाह (तआला) उसकी तौबा क़ुबूल करता है।[3] बेशक अल्लाह तआला माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है।

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَيَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ (40)

४०. क्या तुझे इल्म नही कि अल्लाह (तआला) के लिए आसमानो ज़मीन का मुल्क है? जिसे चाहे अज़ाब दे जिसे चाहे माफ़ कर दे, अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।

---

[1] यह आयत काफ़िरों (विश्वासहीन) के लिए है, क्योंकि ईमानवालों को सज़ा के बावजूद जहन्नम से निकाल लिया जायेगा, जैसाकि हदीस से इसकी तसदीक़ होती है।

[2] कुछ आलिमों के अनुसार चोरी का यह हुक्म आम है, चोरी थोड़ी सी चीज़ की हो या बहुत-सी चीज़ की। इसी तरह वह महफ़ूज़ मुक़ाम पर रखी हो या ग़ैर महफ़ूज़ मुक़ाम पर रखी हो, हर हालत में चोरी की सज़ा दी जायेगी, जब कि दूसरे उलमा के क़रीब इसके लिए महफ़ूज़ और मुक़र्रर ज़रूरी है, फिर तादाद के निर्धारण में इख़्तिलाफ़ है। हदीस के आलिमों के नज़दीक कम से कम तादाद चौथाई दीनार या तीन दिरहम के या उसकी क़ीमत के बराबर की कोई चीज़ हो, इस से कम की चोरी पर हाथ नहीं काटा जायेगा। इसी तरह हाथ कलाईयों से काटे जायेंगे, कोहनी या कंधों से नहीं, जैसाकि कुछ का ख़्याल है। (तफ़सीली जानकारी के लिए हदीस, फ़िक़्ह और तफ़सीर की किताबों को पढ़ा जाये)

[3] इस माफ़ी से मुराद अल्लाह के यहाँ माफ़ी की क़ुबूलियत है, यह नहीं कि माफ़ी माँग लेने से चोरी या किसी हद वाले अपराध (गुनाह) की सज़ा माफ़ हो जायेगी, हुदूद, तौबा से माफ़ नहीं की जायेंगी।

يَاَيُّهَا الرَّسُوْلُ لَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ قُلُوْبُهُمْ ۛ وَمِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا ۛ سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ سَمّٰعُوْنَ لِقَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۙ لَمْ يَاْتُوْكَ ۭ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ مِنْ بَعْدِ مَوَاضِعِهٖ ۚ يَقُوْلُوْنَ اِنْ اُوْتِيْتُمْ هٰذَا فَخُذُوْهُ وَاِنْ لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوْا ۭ وَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ۭ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَمْ يُرِدِ اللّٰهُ اَنْ يُّطَهِّرَ قُلُوْبَهُمْ ۭ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۙ وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ (41)

४१. हे रसूल! आप उन के लिये दुखी न हों जो कुफ्र में दौड़ लगा रहे है जिन्होंने अपने मुह से कहा कि हम ने यक़ीन किया और उनके दिलों ने यक़ीन नहीं किया, और जो यहूदी हो गये, उनमें कुछ झूठ सुनने के अभ्यासी और दूसरे लोगों के गुप्तचर हैं, जो आप के पास नहीं आये, वह कलिमा को उन के जगहों से फेर देते हैं, कहते हैं कि अगर तुम यह दिये जाओ तो मान लो और यह (हुक्म) न दिये जाओ तो अलग रहो, और जिसे अल्लाह भटकाना चाहे उस के लिये अल्लाह पर आप का ज़रा भी हक़ नहीं है, इन्हीं के दिलों को अल्लाह पाक नहीं करना चाहता, इन्हीं के लिये दुनिया में ज़िल्लत और आख़िरत में भारी अज़ाब है।

سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ اَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ ۭ فَاِنْ جَاۗءُوْكَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ اَوْ اَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ وَاِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَّضُرُّوْكَ شَيْـًٔا ۭ وَاِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ (42)

४२. यह कान लगा-लगा कर झूठ सुनने वाले[1] और जी भर-भर कर हराम खाने वाले हैं, अगर यह तुम्हारे पास आयें तो तुम्हें हक़ है चाहो तो उन के बीच फ़ैसला कर दो चाहो तो न करो, अगर तुम उन से मुंह मोड़ भी लोगे तो भी ये तुम्हें कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकते और अगर तुम फ़ैसला करो तो उन में इंसाफ़ के साथ फ़ैसला करो, बेशक इंसाफ़ करने वालों के साथ अल्लाह तआला मुहब्बत रखता है।

وَكَيْفَ يُحَكِّمُوْنَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ فِيْهَا حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۭ وَمَآ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ (43)

४३. और (तअज्जुब की बात है कि) वह कैसे अपने पास तौरात होते हुए, जिस में अल्लाह का हुक्म हैं तुम को फ़ैसला करने वाला बनाते है, फिर उस के बाद पलट जाते हैं, वास्तव (हक़ीक़त) में ये ईमान और यक़ीन वाले नहीं हैं।

[1] سماعون (सम्माऊना) का मतलब है "बहुत सुनने वाला" इस के दो मतलब हो सकते हैं, भेद जानने के लिए बहुत ज़्यादा सुनना या दूसरों की बातें जानने के लिए सुनना, कुछ रावियों ने पहला मतलब लिया है और कुछ ने दूसरा।

४४. हम ने तौरात उतारी है जिसमें हिदायत और नूर है, यहूदियों में इसी तौरात के ज़रिये अल्लाह के मानने वाले,[1] अंबिया (عليهم السلام) और अल्लाह वाले और आलिम फ़ैसला किया करते थे, क्योंकि उन्हें अल्लाह की इस किताब की हिफ़ाज़त का हुक्म दिया गया था, और वे इस पर क़ुबूल करने वाले गवाह थे, अब तुम्हें चाहिए कि लोगों से न डरो, बल्कि मुझ से डरो, मेरी आयतों को थोड़े-थोड़े दाम पर न बेचो और जो अल्लाह की उतारी हुई वह्यी की बिना पर फ़ैसला न करें वे पूरा और मुकम्मल काफ़िर हैं।

إِنَّآ أَنزَلْنَا ٱلتَّوْرَىٰةَ فِيهَا هُدًى وَنُورٌ ۚ يَحْكُمُ بِهَا ٱلنَّبِيُّونَ ٱلَّذِينَ أَسْلَمُوا۟ لِلَّذِينَ هَادُوا۟ وَٱلرَّبَّـٰنِيُّونَ وَٱلْأَحْبَارُ بِمَا ٱسْتُحْفِظُوا۟ مِن كِتَـٰبِ ٱللَّهِ وَكَانُوا۟ عَلَيْهِ شُهَدَآءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا۟ ٱلنَّاسَ وَٱخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوا۟ بِـَٔايَـٰتِى ثَمَنًا قَلِيلًا ۚ وَمَن لَّمْ يَحْكُم بِمَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ فَأُو۟لَـٰٓئِكَ هُمُ ٱلْكَـٰفِرُونَ ﴿44﴾

४५. और हमने (तौरात) में यहूदियों के हक़ में यह बात मुक़र्रर कर दी है कि जान के बदले जान और आँख के बदले आँख, और नाक के बदले नाक, और कान के बदले कान व दाँत के बदले दाँत और ख़ास घावों का भी बदला है, फिर जो इंसान उसको माफ़ कर दे तो वह उस के लिए पछतावा है और जो लोग अल्लाह के हुक्मों के ऐतबार से फ़ैसला न करें, वही लोग ज़ालिम हैं।

وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَآ أَنَّ ٱلنَّفْسَ بِٱلنَّفْسِ وَٱلْعَيْنَ بِٱلْعَيْنِ وَٱلْأَنفَ بِٱلْأَنفِ وَٱلْأُذُنَ بِٱلْأُذُنِ وَٱلسِّنَّ بِٱلسِّنِّ وَٱلْجُرُوحَ قِصَاصٌ ۚ فَمَن تَصَدَّقَ بِهِۦ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهُۥ ۚ وَمَن لَّمْ يَحْكُم بِمَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ فَأُو۟لَـٰٓئِكَ هُمُ ٱلظَّـٰلِمُونَ ﴿45﴾

४६. और हम ने उन के पीछे ईसा इब्ने मरियम को भेजा, जो अपने से पहले की किताब यानी तौरात की तसदीक़ करने वाले थे, और हम ने उन्हें इंजील अता की, जिसमें नूर और हिदायत थी, और वह अपने से पहले की किताब तौरात की तसदीक़ करती थी और वह वाज़ेह हिदायत और तालीम थी, अल्लाह तआला से डरने वालों के लिए।

وَقَفَّيْنَا عَلَىٰٓ ءَاثَـٰرِهِم بِعِيسَى ٱبْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ ٱلتَّوْرَىٰةِ ۖ وَءَاتَيْنَـٰهُ ٱلْإِنجِيلَ فِيهِ هُدًى وَنُورٌ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ ٱلتَّوْرَىٰةِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿46﴾

[1] أَسْلَمُوا (असलमू) यह नबियों की फ़ज़ीलत का बयान है कि वे सभी नबी दीन इस्लाम के मानने वाले थे, जिसकी तरफ़ मोहम्मद ﷺ दावत दे रहे हैं, यानी सभी नबियों का दीन एक ही रहा है, इस्लाम जिसकी बुनियाद है कि एक अल्लाह की इबादत (उपासना) और उसकी इबादत में किसी को शामिल न किया जाये, हर नबी ने सब से पहले अल्लाह और उस के साथ किसी को भी शामिल न करने की दावत दी।

وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فِيْهِ ؕ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿47﴾

४७. और इंजील वालों को भी चाहिए कि अल्लाह तआला ने जो कुछ इंजील में उतारा है, उसी के ऐतबार से फ़ैसला करें,[1] और जो अल्लाह तआला के उतारे हुए से ही फ़ैसला न करें वे फ़ासिक़ हैं।

وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ عَمَّا جَآءَكَ مِنَ الْحَقِّ ؕ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ؕ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿48﴾

४८. और हम ने आप की तरफ़ सच्चाई से भरी यह किताब उतारी है, जो अपने से पहले की सभी किताबों की तसदीक़ करती है और उनकी मुहाफ़िज़ है, इसलिए आप उन के बीच अल्लाह की उतारी हुई किताब के ऐतबार से फ़ैसला कीजिए, इस सच्चाई से हटकर उनकी तमन्नाओं पर न जाईये, तुम में से हर एक लिए हम ने एक शरीअत और रास्ता मुक़र्रर कर दिया है।[2] अगर अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक ही उम्मत बना देता, लेकिन वह चाहता है कि जो तुम्हें दिया है, उस में तुम्हारा इम्तेहान ले, तो तुम सवाब की तरफ़ जल्दी करो, तुम सबको अल्लाह ही की तरफ़ पलट कर जाना है, फिर वह तुम्हें हर वह चीज़ बता देगा जिस में तुम इख़्तिलाफ़ रखते हो।

وَاَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْۢ بَعْضِ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكَ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّصِيْبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ﴿49﴾

४९. और आप उन के झगड़े में अल्लाह की उतारी हुई वह्यी के अनुसार फ़ैसला दीजिए, उनकी इच्छाओं की पैरवी न कीजिए और उन से होशियार रहिये कि कहीं ये आप को अल्लाह के उतारे हुए किसी हुक्म से इधर-उधर न कर दें, अगर यह मुँह मोड़ लें तो यक़ीन करो कि अल्लाह का यही इरादा है कि उन्हें उन के कुछ

---

[1] इंजील के मानने वालों को यह हुक्म उस वक़्त तक था, जब तक हज़रत ईसा की नबूवत का दौर था, नबी ﷺ के आने के बाद हज़रत ईसा की नबूवत का दौर भी ख़त्म हो गया और इंजील के हुक्मों की पैरवी भी ख़त्म हो गई, अब ईमानवाला वही समझा जायेगा जो मोहम्मद ﷺ की रिसालत पर ईमान लायेगा और क़ुरआन करीम के हुक्म की पैरवी करेगा।

[2] इस से मुराद पहले के दीनी क़ानून हैं, जिन में कुछ हुक्म एक-दूसरे से अलग थे, एक दीन के क़ानून में कोई चीज़ हराम और दूसरे दीन के क़ानून में वही हलाल थी, कुछ में किसी मसले में कड़ाई थी तो दूसरे में आसानी थी, लेकिन दीन सभी एक यानी तौहीद पर आधारित (मबनी) था, इस तरह सभी की दावत एक थी।

गुनाहों की सज़ा दे ही दे और ज़्यादातर लोग नाफ़रमान होते हैं।

أَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُونَ ۚ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿٥٠﴾

५०. क्या यह लोग फिर से जाहिलीयत का फ़ैसला चाहते हैं? और यक़ीन रखने वालों के लिए अल्लाह (तआला) से बेहतर फ़ैसला करने वाला और हुक्म करने वाला कौन हो सकता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُودَ وَالنَّصَارَىٰ أَوْلِيَاءَ ۘ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَمَن يَتَوَلَّهُم مِّنكُمْ فَإِنَّهُ مِنْهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٥١﴾

५१. हे ईमानवालो! तुम यहूदियों और इसाईयों को दोस्त न बनाओ, यह तो आपस में ही एक-दूसरे के दोस्त हैं, तुम में से जो कोई भी इन से दोस्ती करे तो वह उन में से है, ज़ालिमों को अल्लाह तआला कभी भी हिदायत नहीं देता।

فَتَرَى الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ يُسَارِعُونَ فِيهِمْ يَقُولُونَ نَخْشَىٰ أَن تُصِيبَنَا دَائِرَةٌ ۚ فَعَسَى اللَّهُ أَن يَأْتِيَ بِالْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ مِّنْ عِندِهِ فَيُصْبِحُوا عَلَىٰ مَا أَسَرُّوا فِي أَنفُسِهِمْ نَادِمِينَ ﴿٥٢﴾

५२. आप देखेंगे कि जिन के दिलों में रोग है, वह दौड़-दौड़ कर उन में घुस रहे हैं और कहते हैं कि हमें डर है कि ऐसा न हो कि कोई हादसा हम पर वाक़ेअ हो जाये, बहुत मुमकिन है कि अल्लाह (तआला) जीत अता कर दे या अपने पास से कोई दूसरा फ़ैसला लाये, फिर तो यह अपने दिल में छिपाई हुई बात पर बहुत शर्मिन्दा होंगे।

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا أَهَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ ۙ إِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ ۚ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَأَصْبَحُوا خَاسِرِينَ ﴿٥٣﴾

५३. और ईमानवाले कहेंगे कि क्या यही वे लोग हैं जो बड़े यक़ीन से अल्लाह की क़सम खा-खा कर कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं, उन के आमाल बर्बाद हो गये और ये नाकाम हो गये।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَن يَرْتَدَّ مِنكُمْ عَن دِينِهِ فَسَوْفَ يَأْتِي اللَّهُ بِقَوْمٍ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُ أَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٍ

५४. हे ईमानवालो! तुम में से जो अपने दीन से पलट जाये[1] तो अल्लाह (तआला) बहुत जल्द ऐसी क़ौम के लोगों को लायेगा जो अल्लाह के प्यारे होंगे और वे भी अल्लाह से प्यार करते होंगे[2] वह नर्म दिल होंगें मुसलमानों पर, सख़्त

[1] अल्लाह तआला की ओर से वह्यी है जो नबी ﷺ की वफ़ात के बाद वाक़ेअ हुई, इस फ़ितना को कुचलने का सेहरा हज़रत अबू बक्र (ؓ) और उन के साथियों को हासिल हुआ।

[2] मुर्तद (दीन के किसी क़ानून पर यक़ीन न रखने वाले) के ख़िलाफ़ जिस क़ौम को अल्लाह तआला खड़ा करेगा, उन के चार अवसाफ़ को वाज़ेह करके बयान किया जा रहा है। १. अल्लाह से मुहब्बत करना और उसका प्यारा होना, २. ईमानवालों के लिए नरम और काफ़िरों के लिए सख़्त होना, ३. अल्लाह की राह में जिहाद करना, ४. अल्लाह के बारे में

عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۡ يُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَآئِمٍ ۭ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿54﴾

और बेरहम होंगें काफ़िरों पर, अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे, किसी मलामत करने वाले इंसान की मलामत करने की फ़िक्र न करेंगें, ये है अल्लाह (तआला) का फ़ज़्ल जिसे चाहे अता करे, अल्लाह तआला सर्वशक्तिमान है और बहुत इल्म वाला है।

اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُوْنَ ﴿55﴾

५५. (मुसलमानों)! तुम्हारा दोस्त ख़ुद अल्लाह और उस का रसूल है और ईमानवाले हैं[1] जो नमाजों को क़ायम करते हैं और ज़कात अदा करतें हैं और वे रूकूउ (ख़शूअ के साथ और ध्यानमग्न होकर) करने वाले हैं।

وَمَنْ يَّتَوَلَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿56﴾

५६. और जो इंसान अल्लाह (तआला) से और उस के रसूल और मुसलमानों से दोस्ती करे उसे यक़ीन करना चाहिए कि अल्लाह (तआला) के बन्दे ही ग़ालिब होंगे।[2]

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿57﴾

५७. मुसलमानों! उन लोगों को दोस्त न बनाओ जो तुम्हारे दीन को हँसी-खेल बनाये हुए हैं, (चाहे) वे उन में से हों जो तुम से पहले किताब दिये गये या काफ़िर हों, अगर तुम ईमानवाले हो तो अल्लाह से डरते रहो।

किसी के मलामत करने की फ़िक्र न करना। सहाबा किराम (رضي الله عنهم) इन अवसाफ़ और फ़ज़ीलतों से मुज़य्यन थे, इसलिए अल्लाह तआला ने उन्हें दुनिया और आख़िरत के सभी सुखों से नवाज़ा और दुनिया में ही अपनी ख़ुशी का सर्टीफ़िकेट उन्हें अता कर दिया।

[1] जब यहूदियों और ईसाईयो की दोस्ती से मना किया गया तो अब इसका जवाब दिया जा रहा है कि फिर वह दोस्ती किससे करें ? कहा कि ईमानवालों का सब से पहला दोस्त अल्लाह तआला ख़ुद है और उस के रसूल हैं और फिर उसके पैरोकार ईमानवाले हैं, आगे उन के कुछ एक गुण बताये गये हैं।

[2] यह अल्लाह तआला की जमाअत की अलामत है और उसकी कामयाबी की ख़बर दी जा रही है। अल्लाह तआला के बन्दों का गुट वही है जो सिर्फ़ अल्लाह, उस के रसूल और ईमानवालों से नाता रखे, और काफ़िरों, मूर्तिपूजकों, यहूदियों और इसाईयों से दोस्ती और तरफ़दारी का नाता न रखे, चाहे वे उन के सगे-सम्बन्धी क्यों न हों, जैसाकि सूर: मुजादिल: के आख़िर में फ़रमाया गया है।

५८. और जब तुम नमाज के लिए पुकारते हो, तो वह उसे हँसी-खेल ठहरा लेते हैं, यह इसलिए कि यह अक्ल नही रखते हैं।

وَإِذَا نَادَيْتُمْ إِلَى الصَّلٰوةِ اتَّخَذُوهَا هُزُوًا وَّلَعِبًا ۭ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿58﴾

५९. आप कह दीजिए, हे यहूदियों और इसाईयो! तुम हम से केवल इसलिए दुश्मनी रखते हो कि हम अल्लाह (तआला) पर और जो कुछ हमारी तरफ़ उतारा गया है और जो कुछ इस से पहले उतारा गया है उस पर ईमान लाये हैं, और इसलिए भी कि तुम में ज़्यादातर फ़ासिक़ हैं।

قُلْ يٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُوْنَ مِنَّآ إِلَّآ أَنْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَآ أُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ ۙ وَأَنَّ أَكْثَرَكُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿59﴾

६०. कह दीजिए कि क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि इस से भी ज़्यादा बुरे बदले का पाने वाला अल्लाह तआला के क़रीब कौन है? वह जिस पर अल्लाह तआला ने लानत की हो और उस पर वह गज़बनाक हुआ हो, और उन में से कुछ को बन्दर ओर सूअर बना दिया, और जिन्होंने झूठे देवताओं की इबादत की, यही लोग बुरे दर्जे वाले हैं और यही सच्चे रास्ते से बहुत ज़्यादा भटके हुए हैं।

قُلْ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ ۭ مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوْتَ ۭ أُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّأَضَلُّ عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿60﴾

६१. और जब वे आप के पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये, अगरचे वह कुफ़्र लिये हुए आये थे और उसी कुफ़्र के साथ गये भी, और यह जो कुछ छिपा रहे हैं उसे अल्लाह तआला अच्छी तरह जानता है।

وَإِذَا جَآءُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَقَدْ دَّخَلُوْا بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوْا بِهٖ ۭ وَاللّٰهُ أَعْلَمُ بِمَا كَانُوْا يَكْتُمُوْنَ ﴿61﴾

६२. और आप देखेंगे कि इन में से बहुत से गुनाह के कामों की ओर, ज़ुल्म और सरकशी की तरफ़ और हराम माल खाने की तरफ़ लपक रहे है, जो कुछ यह कर रहे हैं वह बहुत बुरे अमल हैं।

وَتَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُوْنَ فِي الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَأَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۭ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿62﴾

६३. उन्हें उन के पुजारी और आलिम उनको झूठ बोलने और हराम खाने से क्यों नही रोकते? बेशक ये बुरे काम है, जो यह कर रहे हैं।[1]

لَوْلَا يَنْهٰىهُمُ الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْأَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ الْإِثْمَ وَأَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۭ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿63﴾

[1] यह आलिमों, धर्मगुरुओं और साधु, सतों की मजम्मत है कि आम लोगो में से ज़्यादातर तुम्हारे सामने नाफ़रमानी और बुरे काम करते हैं लेकिन तुम उन्हें रोकते नहीं, ऐसी हालत में तुम्हारी ख़ामोशी बहुत बड़ा गुनाह है, इस से मालूम होता है कि नेक काम की तब्लीग और बुरे काम से रोकने का काम कितना अहम है और इसे छोड़ देने पर कितनी कड़ी धमकी है, जैसाकि अहादीस (रसूल के कौल) में इस मामले को तफ़सीली और वाज़ेह तौर से बयान किया गया है।

६४. और यहूदियों ने कहा कि अल्लाह (तआला) का हाथ बंधा हुआ है, उन्हीं के हाथ बंधे हुए हैं, और उन के इस क़ौल के सबब उन पर लानत की गयी, बल्कि अल्लाह तआला के दोनों हाथ खुले हुए है, जिस तरह चाहता है ख़र्च करता है और जो कुछ तेरी ओर तेरे रब की ओर से उतारा जाता है वह उनमें से ज़्यादातर को सरकशी और कुफ़्र में बढ़ा देता है, और हम ने उन में आपस में ही क़ियामत तक के लिए दुश्मनी और हसद डाल दिया है, वह जब कभी भी जंग की आग को भड़काना चाहते हैं अल्लाह तआला उसको बुझा देता है,[1] यह देश भर में ख़ौफ़ और फ़साद मचाते फिरते हैं[2] और अल्लाह तआला फ़सादियों से मुहब्बत नहीं करता।

وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللَّهِ مَغْلُولَةٌ ۚ غُلَّتْ أَيْدِيهِمْ وَلُعِنُوا بِمَا قَالُوا ۘ بَلْ يَدَاهُ مَبْسُوطَتَانِ يُنفِقُ كَيْفَ يَشَاءُ ۚ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِّنْهُم مَّا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۚ وَأَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۚ كُلَّمَا أَوْقَدُوا نَارًا لِّلْحَرْبِ أَطْفَأَهَا اللَّهُ ۚ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا ۚ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ (64)

६५. और अगर यह अहले किताब ईमान लाते और अल्लाह से डरते, तो हम उनकी सभी बुराईयाँ मिटा देते और उन्हें ज़रूर सुखद जन्नत में ले जाते।

وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْكِتَابِ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأَدْخَلْنَاهُمْ جَنَّاتِ النَّعِيمِ (65)

६६. अगर वह तौरात और इंजील और उन धर्मशास्त्रों की पाबन्दी करते जो उनकी तरफ़ उन के रब की ओर से उतारी गई है तो अपने ऊपर और पैरों के नीचे से खाते,[3] उन में एक गिरोह तो बीच का है और ज़्यादातर लोग बुरा काम कर रहे हैं।

وَلَوْ أَنَّهُمْ أَقَامُوا التَّوْرَاةَ وَالْإِنجِيلَ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْهِم مِّن رَّبِّهِمْ لَأَكَلُوا مِن فَوْقِهِمْ وَمِن تَحْتِ أَرْجُلِهِم ۚ مِّنْهُمْ أُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ۖ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ سَاءَ مَا يَعْمَلُونَ (66)

---

[1] यानी यह जब भी आप के ख़िलाफ़ कोई साज़िश करते है या लड़ाई का सबब पैदा करते हैं, तो अल्लाह तआला उनको नाकाम कर देता और उनकी साज़िश को उन्हीं पर पलटा देता है।

[2] उनका दूसरा आचरण (आदत) यह है कि ज़मीन पर फ़साद फैलाने की भरपूर कोशिश करते हैं। हक़ीक़त यह है कि अल्लाह तआला फ़सादियों को प्रिय नहीं रखता।

[3] ऊपर-नीचे का मतलब कुशादगी के लिया गया है, या ऊपर से का मतलब ज़रूरत के ऐतबार से आसमान से और नीचे से का मतलब ज़मीन से है जिसका नतीजा ग़ल्ला की कसरत है।

يَاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿67﴾

६७. हे रसूल! (सन्देशवाहक) आप की तरफ आप के रब के पास से जो (पैग़ाम) उतारा गया है उसे पहुँचा दें, अगर आप ने यह नहीं किया तो अपने रब का पैग़ाम नहीं पहुँचाया और अल्लाह लोगों से आप की हिफ़ाज़त करेगा, बेशक अल्लाह काफ़िरों को हिदायत नहीं देता।

قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَىْءٍ حَتّٰى تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿68﴾

६८. आप कह दें कि हे अहले किताब! तुम्हारा कोई आधार नहीं, जब तक कि तौरात और इंजील और जो भी (धर्मशास्त्र) तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारे पास उतारा गया है, उसकी पाबन्दी (पालन) न करो और जो आप की तरफ़ (पाक क़ुरआन) आप के रब की तरफ़ से उतारा गया है वह इन में से ज़्यादातर की हठ और कुफ़्र को बढ़ायेगा[1] इसलिए आप काफ़िरों पर अफ़सोस न करें।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـُٔوْنَ وَالنَّصٰرٰى مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿69﴾

६९. मुसलमानों, यहूदियों, तारों के पुजारियों और इसाईयों में से जो भी अल्लाह और आख़िरी दिन (क़यामत) पर ईमान लायेगा और नेक काम करेगा उन पर कोई डर नहीं न वह ग़म करेंगे।

لَقَدْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ رُسُلًا ؕ كُلَّمَا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُهُمْ ۙ فَرِيْقًا كَذَّبُوْا وَفَرِيْقًا يَّقْتُلُوْنَ ﴿70﴾

७०. हम ने इस्राईल के बेटों (यहूदियों) से वादा लिया और उन के पास रसूलों को भेजा, जब कोई रसूल उन के पास ऐसा हुक्म लाया जो उन का मन क़ुबूल न करता था तो उन्होंने एक गुट को झुठलाया और एक गुट को क़त्ल करते रहे।

وَحَسِبُوْٓا اَلَّا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ فَعَمُوْا وَصَمُّوْا ثُمَّ تَابَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوْا وَصَمُّوْا كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿71﴾

७१. और समझ बैठे कि कोई सज़ा न मिलेगी इसलिये अंधे-बहरे हो गये, फिर अल्लाह (तआला) ने उन को माफ़ कर दिया उस के बावजूद भी उन में से ज़्यादातर लोग अंधे-बहरे हो गये, और अल्लाह (तआला) उन के अमलों को अच्छी तरह देखने वाला है।

---

[1] यह हिदायत और भटकाव उस नियमानुसार है जो अल्लाह तआला का क़ानून है, यानी जिस तरह कुछ कामों और चीज़ों के कारण ईमान, नेक काम और फ़ायदेमंद इल्म में बढ़ोत्तरी होती है।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوٓا۟ إِنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلْمَسِيحُ ٱبْنُ مَرْيَمَ ۖ وَقَالَ ٱلْمَسِيحُ يَٰبَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ رَبِّى وَرَبَّكُمْ ۖ إِنَّهُۥ مَن يُشْرِكْ بِٱللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ ٱللَّهُ عَلَيْهِ ٱلْجَنَّةَ وَمَأْوَىٰهُ ٱلنَّارُ ۖ وَمَا لِلظَّٰلِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ ﴿72﴾

७२. वह लोग काफ़िर हो गये जिन्होंने कहा कि मरियम का बेटा मसीह ही अल्लाह है, जबकि मसीह ने (ख़ुद) कहा कि हे इस्राईल के बेटो! मेरे रब और अपने रब अल्लाह की इबादत करो क्योंकि जो अल्लाह के साथ शिर्क करेगा अल्लाह ने उस पर जन्नत हराम कर दी है और उसका ठिकाना जहन्नम है और जालिमों का कोई मददगार न होगा।[1]

لَّقَدْ كَفَرَ ٱلَّذِينَ قَالُوٓا۟ إِنَّ ٱللَّهَ ثَالِثُ ثَلَٰثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّآ إِلَٰهٌ وَٰحِدٌ ۚ وَإِن لَّمْ يَنتَهُوا۟ عَمَّا يَقُولُونَ لَيَمَسَّنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿73﴾

७३. वह लोग भी पूरी तरह से काफ़िर हो गये जिन्होंने कहा कि अल्लाह तीन का तीसरा है,[2] हक़ीक़त में अल्लाह (तआला) के सिवाय कोई माबूद नहीं और अगर यह लोग अपने क़ौल से न रुके तो उन में से जो कुफ्र में रहेंगे उन्हें सख़्त अज़ाब ज़रूर पहुँचेगा।

أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى ٱللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَهُۥ ۚ وَٱللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿74﴾

७४. यह लोग अल्लाह (तआला) की तरफ़ क्यों नहीं झुकते और क्यों नहीं तौबा करते? अल्लाह (तआला) बहुत माफ़ करने वाला और बड़ा रहम करने वाला है।

مَّا ٱلْمَسِيحُ ٱبْنُ مَرْيَمَ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِ ٱلرُّسُلُ وَأُمُّهُۥ صِدِّيقَةٌ ۖ كَانَا يَأْكُلَانِ ٱلطَّعَامَ ۗ ٱنظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ ٱلْءَايَٰتِ ثُمَّ ٱنظُرْ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿75﴾

७५. मरियम के बेटे मसीह सिर्फ़ पैग़म्बर होने के सिवाय कुछ भी नही, उस से पहले भी बहुत से पैग़म्बर हो चुके हैं, उसकी माँ एक पाक और सच्ची औरत थीं,[3] दोनों (माँ-बेटे) खाना खाया करते थे।[4] आप देखिये हम किस तरह दलील

---

[1] हज़रत मसीह ने अपनी बंदगी और रिसालत का इज़हार उस वक़्त भी किया था जब वह माँ की गोद में दूध पीने की उम्र में थे, फिर बुलूग़त में भी यही एलान किया और साथ ही साथ शिर्क की पहचान और बचावो का तरीक़ा और बुराईयाँ भी बयान कर दी कि मूर्तिपूजक पर जन्नत हराम है और उसका कोई मददगार भी न होगा, जो उसे जहन्नम से निकाल लाये, जैसाकि ज़ालिमों का भ्रम है।

[2] यह इसाईयों के दूसरे गुट का बयान है, जो तीन के जोड़ को अल्लाह मानता है और उसे त्रिमूर्ति कहता है।

[3] صِدِّيقَة का मतलब है ईमानवाली और पाक यानी उन्होंने भी हज़रत ईसा की रिसालत को माना और उस पर यक़ीन किया, इसका मतलब यह हुआ कि वह रसूल नहीं थीं जैसा कि कुछ लोगों को भरम हुआ है।

[4] इस में हज़रत मसीह और हज़रत मरियम दोनों के माबूद न होने और इंसान होने को साबित किया है, क्योंकि खाना खाना, यह इंसान की ज़रूरत और मर्ज़ी के मुताबिक़ है। जो माबूद हो, वह तो इन गुणों (सिफ़तों) से तो पाक है, बल्कि हर तरह से पाक होता है, यानी दोनों आम इंसान थे और उन में सभी इंसानी ख़ुसूसियत पाई जाती थीं।

उनके सामने पेश करते हैं, फिर ख़्याल कीजिए कि वे किस तरह पलटाये जाते हैं।

قُلْ أَتَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ۚ وَاللَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ (76)

७६. आप कह दीजिए कि क्या तुम अल्लाह के सिवाय उनको पूजते हो जो न तो तुम्हारे नुक़सान के मालिक हैं और न किसी तरह के फ़ायदे के, अल्लाह (तआला) ही अच्छी तरह सुनने वाला और पूरी तरह से जानने वाला है।[1]

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوا مِن قَبْلُ وَأَضَلُّوا كَثِيرًا وَضَلُّوا عَن سَوَاءِ السَّبِيلِ (77)

७७. कह दीजिए, हे अहले किताब ! अपने दीन में ग़ुलू न करो[2] और उन लोगों की इच्छाओं की पैरवी न करो, जो पहले से भटक चुके है और बहुतों को भटका चुके हैं और सीधे रास्ते से हट गये हैं।

لُعِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَىٰ لِسَانِ دَاوُودَ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۚ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوا وَّكَانُوا يَعْتَدُونَ (78)

७८. इस्राईल की औलाद के काफ़िरों को (हज़रत) दाऊद और (हज़रत) ईसा इब्ने मरियम के मुंह से लानत किया गया, इस सबब कि वे नाफ़रमानी करते थे और हद से तजावुज़ करते थे।

كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَن مُّنكَرٍ فَعَلُوهُ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ (79)

७९. वे आपस में एक-दूसरे को बुरे कामों से जो वह करते थे रोकते न थे, जो कुछ यह करते थे ज़रूर वह बहुत बुरा था।

---

[1] यह मूर्तिपूजकों की बेअक़्ली को साबित किया जा रहा है कि उन्होंने ऐसों को पूज्य बना रखा है जो किसी को न फ़ायेदा पहुँचा सकते है और न नुक़सान, बल्कि फ़ायेदा-नुक़सान तो दूर की बात, वह तो किसी बात को सुनने और किसी की हालत को जानने की ही ताक़त नहीं रखते हैं, यह ताक़त सिर्फ़ अल्लाह ही को है, इसलिए मुश्किल कुशा और हाजत रवा सिर्फ़ वही है।

[2] यानी सच्चाई की पैरवी करने में हद से तजावुज़ न करो, और जिनका एहतेराम करने का हुक्म दिया गया है, उसमें ग़ुलू करके नबूवत के पद से उठा कर माबूद के मुक़ाम पर न बिठा दो, जैसे कि हज़रत मसीह के बारे में तुम ने किया, ग़ुलू हर वक़्त में शिर्क और भटकाव का ज़रिया रहा है। मुसलमान भी इस ग़ुलू से महफ़ूज़ नहीं रह सके, उन्होंने कुछ विद्वानों (आलिमों) के बारे में ग़ुलू किया और उनके ख़्याल, क़ौल यहां तक कि उन से जुड़े हुए दीनी फ़ैसले और इरादों को भी रसूल अल्लाह ﷺ की हदीस के मुक़ाबले में तरजीह दी।

تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَ فِي الْعَذَابِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿80﴾

८०. उन में के ज़्यादातर लोगों को आप देखेंगे कि वे काफ़िरों से दोस्ती करते हैं, जो कुछ उन्होंने अपने आगे भेज रखा है वह बहुत बुरा है, (यह) कि अल्लाह (तआला) उन से नाराज़ हुआ और वे हमेशा अज़ाब में रहेंगे।[1]

وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَاۗءَ وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿81﴾

८१. अगर उन्हें अल्लाह (तआला) पर, नबी पर और जो उतारा गया है, उस पर ईमान होता तो यह काफ़िरों से दोस्ती न करते, लेकिन उन में से ज़्यादातर लोग दुराचारी (ग़लतकार) हैं।[2]

لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰى ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿82﴾

८२. बेशक आप ईमानवालों का सख़्त दुश्मन यहूदियों और मूर्तिपूजकों को पायेंगे,[3] और ईमानवालों के सब से ज़्यादा क़रीब की दोस्ती, आप ज़रूर उन में पायेंगे जो अपने आप को इसाई कहते हैं, यह इसलिए कि उन में आलिम और वैरागी हैं और इस सबब कि वे घमण्ड नहीं करते।[4]

---

[1] यह काफ़िरों से दोस्ती का नतीजा है कि अल्लाह तआला उन पर ग़ज़बनाक हुआ और इसी ग़ज़ब के सबब दायमी तौर से जहन्नम का अज़ाब है।

[2] इसका मतलब यह है कि जिस इंसान के अन्दर सच में यक़ीन होगा वह गुमराहों से कभी दोस्ती नहीं करेगा।

[3] इसलिए कि यहूदियों में दुश्मनी और इंकार, सच्चाई से मुंह मोड़ना, घमन्ड, आलिमों और ईमानवालों की आलोचना की भावना बहुत पायी जाती है। यही वजह है कि नबियों का क़त्ल और उन को झुठलाना उनका किरदार रहा है, यहां तक कि उन्होंने रसूल अल्लाह ﷺ के क़त्ल की कई बार साज़िश की, आप ﷺ पर जादू भी किया, हर तरह से नुक़सान पहुंचाने की घृणित (मकरूह) योजना बनाई और इस बारे में मूर्तिपूजकों की भी यही हालत रही है।

[4] رهبان से मुराद, नेक और वैरागी और قسيسين से मुराद उलमा और आलिम है, यानी इन इसाईयों में इल्म और नर्मी है, इसलिये उन में यहूदियों की तरह इंकार और घमन्ड नहीं। इस के सिवाय इसाई दीन में माफ़ी की शिक्षा (तालीम) की प्रधानता है, यहां तक कि उन के ग्रन्थों में लिखा है कि कोई तुम्हारे दायें गाल पर मारे तो बायां गाल उस के सामने कर दो, इन सबबों से यह यहूदियों के मुक़ाबले मुसलमानों से क़रीब हैं।